

ASHA ARCHIVES

STANLEY

1.199

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः शिवाय ॥ आवावावा दहासाः घृष्टेनूतनवा
 वावर्द्धकनालाः कृष्णश्रीयिज्ञनकाः नननूधिववसाः यू
 र्ध्वपूरुष्टुमीमाः शिवायूरुष्टुवकाः सनदगणिनिशाः
 सर्वमाङ्गल्ययुकाः सादवीनित्यमवर्षे विदगमूनिनूनाः ४
 पादुमाङ्गल्ययुकाः ॥ ॥ आसासंसावगर्ककालदनन
 रिमाः वक्रिर्षिगमर्ककमः निनामख्याममधः सूनवि
 पूर्वधनी वलुनूदायवकुः वामूकुवकुमूकुः युकादिग

दधनात्रलिङ्गद्विजिह्वा रुक्मांगीवान्धुना त्रविहाणि
नयनायादुर्मा नूदगकि ॥ ॥ धानाधानानिधानां वृक
टितदधनात्रकनयानित्रीदीः शुक्लांगीमां सरुदीः नूनून
धिप्रवसा चर्मनायागगम्या । चञ्चल (मुदमुदाः यवमः
यवयवा मालनीविश्वदहाः शिसाना संयरावाः यधुयः
मिसहितायादुर्माः नूदगकि ॥ ॥ उगद्रया ॥ गुरु ४ ॥

अथवा २

ॐ नमः ॥ १ ॥ भक्तकामिकुहनाः किं कित्तु रासवृ
याः सा मा कवद्रिषियथ दनमध्वमस्तुः चिन्ते क' वि
रु विमयाः कयलीनरावाः सृष्टिस्तु कियलयकावग
नत्ववृया ॥ १ ॥ ज्ञानात्मिका सकलराव विरावरिन्ताः
आनन्दमन्दितसदा यत्र सार्थलीनाः । नाडी कवा कविन
विग्रहमनुवृयाः सकादष्टाद्वयगता स्वतुक्तिद्वयधु ॥ २
॥ विद्यागताद्वयववा कूलकर्मवधुः त्रैलोक्यलयेदम्

सिद्धा ५

वा कूल संध सिद्धा । एकोक्तं क गति चक्र वन ययुष्मा
सत्संग सिद्ध वन रे वन ययु डिता या ॥ ३ ॥ काली कला क
लित काल कना मिवाहा श्री चक्र मध्न निलया नवरुद
रिना यूपु गिर्भ क कलिता कूल रान नूया विज्ञान सि
द्धि वन वद्रि कूल यं चणु ॥ ७ ॥ आलम्ब चैव न यदा य
नमय चणु चक्र कम गदित मरु महार्थ विला । सत्संग था
गति वता कूल सिद्धि दाही स्वार वरा विक्रिय यो नो य

वामा मिहाली ॥ ५ ॥ ०० ति ॥ ॥ वाङ् वाङ् श्व वीया ॥
वाम खट् च वकिं चरु वयि वसूत ऊ कया लालि यूपु
ना नालं काल युका तिथि नय नध्वी मूणु काया लमाला ।
श्री मा न्य दाङ् वाङ् ०० ति वगता नृत्य सामा वि (०) ४
सर्वा दवी यथे व सतत मयिन म तां सुदाने वरु य ॥ ० ॥
स्वर्गु काट श्व वीया ॥ कूट गी स्वर्गु यृवा सिन क नरु विना
वा यो न वद रुम चिता लाध ४ स्वकी य द ग गत दलय ध

गंगा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
दिव्यं कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥~~
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
दिव्यं कुरु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ हृदिडा नय नमः अथ मनक मृषि न नृक्षु य नृक्षु नृक्षु
 दागो येति देवता सर्वे विमाहना एतसकल दूषे वेक्ष एतद्वि
 मृजीवानां गतिस्तैरनारथ जय विनियोगः ॥ न्यासे ॥ गम हृदय
 दि ॥ ॥ ध्यानं ॥ नत्त मधुय मध्व च नत्त सिंहासनाय त्रि ॥ य
 तव धूम्र कालं य मोल्यार नरा राखनी ॥ विन विना किं दव
 गजवकु गिला वनी ॥ पाण कूष्का धमूडा य नृक्षु चारय वनी ॥
 दुष्मानु देव देव धी ध्याय देव मन न्यधी ॥ ॥ तस्य मनु ॥
 ॐ हूँ गं ह्रीं ह्रिडा न नय तथ वन वन द सर्व जन हृद

यस्तु रथ ॥ १०८ ॥ कवच ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रिडा न नय तथ वन वन द सर्व जन हृद
 ॐ ह्रीं ह्रिडा न नय तथ वन वन द सर्व जन हृद
 मृच्यते सर्व संकटाट ॥ आस्ता कवच द वि ग लो न स्य मनु ज
 य ॥ सिद्धि न जायते तस्य कल्प काटि गते त्रि पि ॥ ॐ आभा देव
 विन यायु यमा द धा निखा यत्रि ॥ सीमा दा ह्यु ग यायु ह मध्व च
 गध धिय ॥ गध की उ ध्व दूयु र्म नो धम या गि न नाय क ॥ ग १४
 की गान्धित ४ यायु वदनी सवी सिद्धय ॥ जि द्वा या सि मूरव ४ यायु
 गी या या दू र्म र्म रुथ ॥ वि द्वा १४ हृदय यायु वि द्वा ना धी ध्व व क

